This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

जब चोर बने कोतवाल

;जन नाट्य मंचऋ सितम्बर १९८३ऋ ४० मिनटऋ कम से कम ७ कलाकार।द्ध

पात्र विभाजन

१. कोरस / भांजा-१/ जग्गू/ कलुवा / मेनन
२. कोरस /भांजा-२/ शेरा/ रामसेवक/ मल्होत्रा
३. कोरस / धन्नामल / नव़ळाबपोश-२ / बूढ़ा-२
४. कोरस/राणा / बूढ़ा-१
५. कोरस/मां / मिसिज़ बनर्जी
६. जल्लाद सिंह / मंत्री / मंगलू / नव़ळाबपोश-१ / जवान
७. वड़क सिंह / लखन / देसाई

[कंधे पर लाल अंगोछा डाले कोरस का प्रवेश। गाना गाते हैं।]

गाना : सुनने वालो सुन लो व़िळस्सा, व़िळस्सा सुन लो भ्रष्टाचार का,
सुन लो व़िळस्सा सुनने वालो दौलत वेळ किरदार का,
जिधर भी जाओ, उधर ही पाओ बढ़ती भ्रष्टाचारी,
घात लगाए रहते हैं, ज्यूं चौकस रहे शिकारी,
देखो मंत्री भ्रष्टाचारी, उनवेळ संत्री भ्रष्टाचारी,
आला अप़ळसर भ्रष्टाचारी, अदना चाकर भ्रष्टाचारी।
अरे किसे गिनाएं, किसको छोड़ें, चक्कर है बेकार का,
कलयुग में यह होना ही था[]
युग है भ्रष्टाचार का, भई व़िळस्सा भ्रष्टाचार का,
हां व़िळस्सा भ्रष्टाचार का, जी व़िळस्सा भ्रष्टाचार का।

[बाहर से आवाज़ आती है। गाना-नाचना बंद कर बुत से बन जाते हैं।]

आवाज़ : वड़क सिंह ! अरे ओ वड़क सिंह!

[थानेदार जल्लाद सिंह आता है। आवाज़ देता हुआ इधर-उधर घूमता है।]

जल्लाद सिंहः वड़क सिंह! ओ वड़क सिंह! *;चिंघाड़ता हैद्ध* अबे ओ वड़क सिंह।

[हवलदार वड़क सिंह आता है।]

वड़क सिंह : हां सरकार।
जल्लाद : क्या हैं समाचार?
वड़क : सब फिट हैं सरकार।
जल्लाद : क्या कहा नाहंजार ?
वड़क : सब फिट है सरकार।
जल्लाद : फिट का मतलब बरखुरदार?
वड़क : ना कोई वैळदी फरार, ना कोई नया गिरफ्तार।
ना कोई चोरी, ना डवैळती, ना हत्या, ना बलात्कार,
ना कोई जुलूस, ना जलसा, ना पोलिटिकल इश्तहार,
ना कोई धरना, ना हड़ताल, ना मजदूरों की चीखो-पुकार।
यानी सब फिट है सरकार, यानी सब फिट है सरकार।
जल्लाद : गधे की औलाद, तुझ पर जमाने की फिटकार,
लगाऊंगा तुझे डंडे मैं सरेबाज़ार।
मेरा नाम जल्लाद सिंह है, जल्लाद सिंह, रोज़नामचा ख़ाली रहे तो आ जाता है मुझे बुख़ार।
परेड सावधान!

[वड़क सिंह ज़ोर से सावधान होता है। उसका डंडा गिर पड़ता है।]

अब कान खोलकर सुन ले, मेरा रिकार्ड है, कि जिस भी थाने में रहता हूं मैं वहां डेली एक छुरेबाजी, तीन चोरी, एक आगज़नी, और होते हैं दो बलात्कार। आठ लाठी चार्ज और प़ळाइरिंग दो बार। हर मंगलवार को पड़ता है कोठे पर छापा, और शुक्करवार को अपोजीशन पार्टी वेळ दफ़्तर पर। महीने में कम से कम एक बार, पीटा जाता है कोई पत्रकार।
मेरे पैंतीस साल वेळ वैळरियर का यह रिकार्ड है। जब तक यह सब ना हो, ''सब फिट है सरकार'' ना कहियो नाहंजार।

वड़क : जो हुवुळम सरकार। गर करें माप़ळ, तो मेरी आज की रिपोर्ट है तैयार।
जल्लाद : ''रिपोर्ट है तैयार?'' वैळसी रिपोर्ट बरखुरदार?
वड़क : बताता हूं। बताता हूं। रोजनामचा खाली ना रहे इसी खयाल से मैंने छापा मारा।
जल्लाद : छापा मारा! अरे वाह मेरे यार, पर कहां?
वड़क : बताता हूं। बताता हूं। रात का वक्त था।
जल्लाद : अच्छा--?

वड़क : शहर की अंधेरी गलियों में सन्नाटा छाया हुआ था।

जल्लाद : ओ हो हो हो हो।

वड़क : दूर एक रोसनी टिमटिमा रही थी।

जल्लाद : हाय, हाय मेरी जान-

वड़क : अंधेरा, सन्नाटा और टिमटिमाती रोसनी देखकर मैं भांप गया कि दाल में वुळछ काला है।

जल्लाद : *;मूड एकदम बिगड़ जाता है।द्ध* क्या?

वड़क : कि दाल में वुळछ काला है।

जल्लाद : *;वड़क को लात मारता है।द्ध* गधे वेळ बच्चे, इत्ते अंधेरे में तूने दाल का काला भी देख लिया?

वड़क : *;कपड़े झाड़कर काप़ळी नाराज़-सा उठता है।द्ध* माफ करें सरकार, आप को सायरी की जरा भी जांच नहीं। मैं तो समां बांध रहा था, ऐटमौसफियर।

जल्लाद : बस-बस-बस। बहुत हो गया ऐटमोसफियर, सीधे-सीधे बता क्या हुआ।

वड़क : बता तो रहा हूं। मैं आगे बढ़ा, एक जगह से गाने बजाने की आवाज आ रही थी।

।जल्लाद एक तरप़ळ हो जाता है। वड़क छुपकर देखता है। मंत्री वेळ भांजों को राणा शराब पिला रहा है। सबका प्रवेश।

भांजे : होंठो पे मन की बात मैं छुपावेळ चली आई,
खुल जाए वही बात तो दुहाई है दुहाई।

राणा : और पीजिए, छोटे सरकार, थोड़ी-सी और

।वड़क छलांग लगाकर, डंडे को बंदूव़ळ की तरह थामे, उनवेळ पास आता है। शराबी डरकर एक दूसरे से चिपट जाते हैं।।

वड़क : हैंड इज अप। हाथ ऊपर उठा लो। *;इधर-उधर देखता है।द्ध* गैर-कानूनी शराब-खाना! अब तुझे कोई नहीं बचा सकता।

।तीसरा आदमी डंडे को ज़ोर से ख़ींच कर वड़क को गिरा देता है। उसवेळ सीने पर पांव रखकर खड़ा होता है। शराबियों में धीरे-धीरे जान आती है।।

राणा : दो कौड़ी वेळ ठुल्ले, तेरी यह हिम्मत कि राणा घनगरज वेळ धंधे में हाथ डाले? और तुझे मालूम है यह कौन है। मंत्रीजी वेळ भांजे हैं। चल उठ, माप़ळी मांग।

।भांजे लड़खड़ाते हुए वड़क की तरप़ळ बढ़ते हैं।।

भांजे : उठ, उठ।

।वड़क उठता है। एक भांजा उसका गिरेबान पकड़ता है, दूसरा उसको ज़ोरदार घूंसा लगाता है। वड़क घूमता हुआ दूसरे कोने में खड़े जल्लाद वेळ पैरों में जा गिरता है। दोनों भांजे एक तरप़ळ निकल जाते हैं, राणा दूसरी तरप़ळ।।

वड़क : सरकार, वहां तो लेने वेळ देने पड़ गए।

।जल्लाद वड़क को घसीटता हुआ बीच में ला पटकता है और उसवेळ कंधों पर बैठ जाता है।।

जल्लाद : हराम वेळ जने, यह तूने क्या किया? राणा घनगरज शहर का सबसे मज़बूत आदमी है। सारे चोरों, डावुळओं, जेबकतरों, दलालों से उसे पत्ती मिलती है। इस थाने को महीने वेळ पांच हजार देता है और ऊपर इससे भी ज़्यादा, तू मुझे बर्बाद करवाएगा वड़क सिंह।

वड़क : *;बिसूरते हुएद्ध* सरकार, अनजाने में भूल हो गई। आगे से ऐसी मिसटेक नहीं होगी।

जल्लाद : मिसटेक का बच्चा। *;वड़क की टोपी पेळंकता है। एक तरप़ळ जाता है।द्ध* अबे कोई और झमेला तो नहीं कर बैठा तू?

;वड़क डरकर दूर खिसकता है।द्ध बोलता क्यूं नहीं?

;वड़क और खिसकता है।द्ध अबे बोल!

वड़क : *;बुरी तरह डरा हुआ।द्ध* सरकार, सरकार मारना नहीं। मुझे मालूम नहीं था।

जल्लाद : क्या, क्या मालूम नहीं था?

वड़क : *;टोपी उठाकर पहनता है, जल्लाद से और दूर हटता है।द्ध* कि, कि वह, वह, वह गोदाम किसका था।

जल्लाद : गोदाम! कौन सा गोदाम?

वड़क : जिस पर मैंने छापा मारा।

जल्लाद : छापा! छापा मारा! फिर छापा मारा! *;लंबे-लंबे डग भरता एकदम वड़क वेळ सिर पर जा सवार होता है।द्ध* अबे गधे वेळ बच्चे, तुझे छापे मारने की अथाल्टी दी किसने है? *;पलटकर सिर पकड़े दूर जाता है।द्ध* हे राम, अबकी यह क्या कर बैठा?

वड़क : सरकार मैं गस्त लगा रहा था कि मुझे आवाज आई।*;कान लगाकर सुनने की मुद्रा लेता है। जल्लाद एक तरप़ळ जाता है।द्ध*

नैपथ्य : अबे कमीनो, इतना शोर मत करो! किसी ने सुन लिया तो गज़ब हो जाएगा।

वड़क : मेरे कान खड़े हुए। मैंने झांककर देखा, बहुत सारे लोग बैठे पत्थरों का चूरा बना रहे थे।

।शेरा और जग्गू पत्थर वूळटते हैं। धन्नामल देख रहा है।।

धन्नामल : अबे ओ जग्गू, और छोटा कर यह हरा पत्थर, बिल्वुळल मूंग वेळ बराबर, और तू शेरा छोटा-छोटा करवेळ तोड़ इस लाल पत्थर को। बिल्वुळल मसूर की दाल जितना कर दे वरना साप़ळ पता लग जाएगा कि दालों में मिलावट की गई है।

वड़क : *;लपककर उनवेळ सामने आता है।द्ध* यह क्या हो रहा है? *;वुळछ उठाता है।द्ध* दालों में पत्थरों की मिलावट। जनता की जान वेळ साथ ऐसा घिनौना खिलवाड़!

धन्नामल : *;आगे बढ़ता है, वड़क की परिक्रमा करता है। वड़क डंडे को बंदूव़ळ की तरह थामे अपनी धुरी पर घूमता है।द्ध* इलावेळ

में नए आए लगते हो। कोई बात नहीं। धीरे-धीरे खुद ही समझ जाओगे। यूं भी हमें तुम्हारे जैसे ईमानदार आदमी पसंद हैं। हम हैं धन्नामल टनाटन। यह नाम याद रखना, इस शहर में यह नाम याद रखना बहुत ज़रूरी है।

वड़क : *;डपटकरद्ध* बको मत मिस्टर टनाटन *;धन्नामल एक व़ळदम पीछे हटता है। वड़क वेळ पीछे शेरा ख़ामोशी से खड़ा हो जाता है।द्ध* वरना तुम्हारी घंटी तो मैं अभी बजा दूंगा।

धन्नामल : उफ़्फ, यह तो बिल्वुळल गधा लगता है। शेरा।

[शेरा वड़क को पेट में घूंसा मारकर पेळंकता है। बाव़ळी तीनों बाहर जाते हैं। जल्लाद धीरे-धीरे वड़क वेळ पास जाकर उसकी गुद्दी पकड़ कर उसे खड़ा करता है।]

जल्लाद : वड़क सिंह, तू पागल हो गया है क्या? भिड़ वेळ छत्ते में हाथ डाल दिया। मुझे नौकरी से बरख़ास्त करवाएगा साले? *;वड़क को एक तरप़ळ धक्का देता है।द्ध* साले, सेठ धन्नामल टनाटन शहर वेळ सबसे बड़े रईस हैं। शुगर मील और कपड़ा मील वेळ मालिक, अनाज और किरयाने वेळ सबसे बड़े ब्यापारी, भूतपूर्व मेयर और होने वाले मंत्री। जिले वेळ सारे एम.पी. सुबह शाम उन्हें सलाम बजाने आते हैं। और तूने उन्हीं की वरकशाप पर छापा मार दिया? तू हम सबको ले डूबेगा। *;वड़क वेळ नज़दीक जाता है।द्ध* आज से तेरी गश्ती ड्यूटि बंद। उठा, उठा वह झाडू और उधर से भरवेळ ला बाल्टी में पानी। साले तुझसे जिंदगी भर थाने की टट्टियां ना साफ करवाईं तो मेरा नाम भी जल्लाद सिंह नहीं।

[वड़क दौड़कर जाता है, पीछे जल्लाद। नैपथ्य से नारे सुनाई देते हैं[''मंत्रीजी ज़िंदाबाद'', जीतेंगे भई जीतेंगे, मंत्रीजी जीतेंगे।'']

जल्लाद : आ गया, आ गया समय चुनाव का,
मीटिंगों का, भाषणों का, मोल भाव का।
आ गया शराब का, कबाब का समय,
जात-पात-धर्म वेळ हिसाब का समय।
समय है लाठियों की, चावुळओं की मार का,
समय है शासकों वेळ दुश्मनों की हार का।
समय, समय, समय, चुनाव का समय,
चुनाव का समय, समय, समय, समय।

[फिर नारे। जल्लाद नाचते-नाचते रुकता है।]

समय! मंत्रीजी की चुनाव सभा का समय हो गया जल्लाद सिंह, और तू अभी यहीं खड़ा है? *;अपने व़ूळल्हे पर ज़ोर से छड़ी मारता है।द्ध* अबे दौड़वेळ जा, चौक पर उनकी मीटिंग का बंदोबस्त कर साले। *;फिर मारता है। चलने को होता है, पलटकर दर्शकों सेद्ध* जब तक मार ना पड़े, साले हिल वेळ ही नहीं देते। *[फिर मारता है। जाता है। छः मज़दूरों वेळ कोरस का प्रवेश। कंधे पर लाल गम्छे।]*

कोरस : हम हैं इस शहर वेळ ग़रीब मज़दूर
और उनवेळ परिवारों वेळ लोग।
सेठ की पैळक्ट्रियों में काम करते हैं,
गंदी बस्ती में रहते हैं,
हमारी एक यूनियन है।
यूनियन की मांगें हैं।
जिन्हें लेकर हम लड़ते हैं।

मां : मैं कलुवा की मां हूं। मुझे उसकी यह यूनियनबाजी बिल्वुळल पसंद नहीं।

लखन : वुळछ साल पहले यूनियन पर ज़ोरदार हमला हुआ था।

बूढ़ा-१ : तब बहुत से यूनियन वालों को पुलिस ले गई थी।

बूढ़ा-२ : कलुवा, लखन और रामसेवक तो डेढ़ साल वेळ बाद छूटे थे।

मां : कलुवा बेचारा, सूखकर कांटा हो गया था। उसवेळ पीछे बस्ती पर बुलडोजर चलाए गए थे। झोपड़े मिट्टी में मिला दिए गए थे।

कोरस : मां डरती है कि वैसा ही फिर होगा, इसीलिए बार-बार कहती है...

मां : *;कलुवा सेद्ध* बेटा, इस सबसे दूर रह बेटा।

कोरस : पर हम कहते हैं।

कलुवा : मां, यह सब जरूरी है रोजी-रोटी की खातिर। इज्जत की जिंदगी की खातिर, इनसे लड़ना जरूरी है मां।

लखन : आज वह मज़बूत हैं।

रामसेवक : आज उनका पल्ला भारी है।

कलुवा : पर कल हम मजबूत होंगे। तब इस भूख-प्यास वेळ, इस जोर-जुल्म वेळ जीवन को बदल पाएंगे।

रामसेवक : ऐसी बहसें मजदूरों में अक्सर चला करती हैं।

कोरस : लेकिन अब एक नया सवाल सामने आया है।

कलुवा : *;भाषण देता हैद्ध* मंत्री ने इलैक्शन की तैयारी जोर-शोर से शुरू कर दी है। हर बार की तरह अबवेळ भी राणा वेळ गुंडे बस्ती में शराब बांटेंगे। सेठ भी मंत्री को चंदा देकर गोदाम से माल गायब करेगा। यूनियन का फर्ज है कि इस साजिश को नाकाम करे।

कोरस : क्या हम इस सबवेळ लिए तैयार हैं?

कलुवा : भई, मेरी राय में तो जवाब साप़ळ है।

रामसेवक : हां, हम तैयार हैं। हम मुकाबला करेंगे, डट वेळ करेंगे।

लखन : शराब को बस्ती में घुसने न देंगे।

कलुवा : सेठ को कालाबाजारी नहीं करने देंगे।

बूढ़ा-२ : हम यह सब नहीं कर पाएंगे। उनवेळ पास पुलिस है।

बूढ़ा-१ : गुंडे हैं, हथियार हैं, पैसा है।

बूढ़े : यहां तक कि कानून भी उनवेळ ही साथ है।

मां : वह फिर कलुवा को पकड़कर ले जाएंगे। उसवेळ बीवी-बच्चों को कौन खिलाएगा? मेरे बुढ़ापे का सहारा कौन होगा?

बूढ़े : बेटा, हमारी मानो तो इस सबसे दूर ही रहो।

कलुवा : आपकी मानें तो सारी जिंदगी ऐसे ही गुलामी करें।

रामसेवक : सिर झुकाकर पिसते रहें।

लखन : ज़ुल्म सहते रहें।

बूढ़े : और कर भी क्या सकते हैं?

लखन : संघर्ष, मुक़ाबला, मुख़ालफ़त।

रामसेवक : एक होकर, एक आवाज़ में, उनसे कह सकते हैं...

कलुवा : कि हम और बर्दाश्त नहीं करेंगे।

दोनों बूढ़े सिर हिलाते धीरे-धीरे निकल जाते हैं। मां उनवेळ पीछे चलती है। रुकती है, पलटकर कलुवा, लखन और रामसेवक की तरफ़ एक क़दम लेती है।

मां : कोई भी समझदार आदमी तुम्हारी बात नहीं मानेगा।

रामसेवक : आज नहीं मानेंगे, तो कल मानेंगे।

कलुवा : पर हम कल तक उनका इंतजार नहीं करेंगे।

लखन : हम मुक़ाबला करेंगे।

रामसेवक : सेठ वेळ मनसूबे कामयाब ना होने देंगे।

लखन : राणा की गुंडागर्दी नहीं चलने देंगे।

कलुवा : पुलिस वेळ अत्याचार नहीं सहेंगे।

रामसेवक : धीरे-धीरे हमारे साथ और मज़दूर आएंगे।

कलुवा : यहां तक कि मां कल तू भी आएगी हमारे साथ।

मां : मेरा कहना मान बेटा, यह सब छोड़ दे।

जल्लाद सिंह वूळदकर अंदर आता है। चीख़-पुकार करता है, छड़ी चलाता है। मज़दूर निकल जाते हैं।

जल्लाद : बैठ जाओ, बैठ जाओ, धक्कमपेल मत करो, मंत्रीजी वेळ आने का समय हो गया है। किसी ने कोई गड़बड़ की तो मुझसे बुरा कोई न होगा। *जल्लाद जाता है। नारे आते हैं, ''मंत्रीजी ज़िंदाबाद''। धन्नामल और राणा उल्टे क़दम चलते, नारे लगाते हुए आते हैं। उनवेळ पीछे मंत्री, पूळल माला पहने।*

मंत्री : भाइयो और बहनो, हमने आज तक जो भी पैळसला किया उसे पूरा किया। हमने पैळसला किया था कि हरियाणा में अपनी सरकार बनाएंगे, बनाई। *;धन्नामल और राणा तालियां बजाते हैं।द्ध* हमने पैळसला किया था कि कर्नाटक में अपनी सरकार बनाएंगे, कोशिशें जारी हैं। *;तालियांद्ध* हमने पैळसला किया था कि मंत्री बनने वेळ एक साल वेळ भीतर-भीतर अपना एक फ़ळाइव-स्टार होटल खड़ा कर लेंगे सो ख़ैर छोड़िए। कहने का मतलब है कि हम जो भी पैळसला करते हैं उस पर अमल करते हैं। हमारा इस बार का पैळसला है कि हफ़्ते-भर वेळ अंदर-अंदर अपने ज़िले की पवित्र भूमि से भ्रष्टाचार का नामो-निशान मिटा देंगे। *;तालियांद्ध* इस महान कार्य को संपन्न करने वेळ लिए हमने एक समिति, एक उच्च-स्तरीय समिति नियुक्त की है जिसमें आपवेळ शहर वेळ दो नेक, शरीफ़ळ, इज़्ज़तदार और कर्मठ महापुरुषों को शामिल किया गया है। आप समझ ही गए होंगे कि ऐसे महापुरुष कौन हो सकते हैं। वे हैं सेठ धन्नामल टनाटन *;तालियां। धन्नामल झुक-झुककर सलाम करता हैद्ध* और राणा घनगरज। *;तालियां, राणा भी सलाम करता है।द्ध* मैं कमेटी से प्रार्थना करता हूं कि वह तुरंत अपने काम में जुट जाएं और एक हफ़्ते में अपनी रिपोर्ट हमें पेश करें। धन्यवाद।

मंत्री जाता है। धन्नामल और राणा नारे लगाते हैं। अभिनय स्थल वेळ बीच में आकर ज़ोर से हँसते हैं। उस मुद्रा में थम जाते हैं। कोरस का प्रवेश।

गाना : जब चोर बने कोतवाल, तो क्या हो हाल,
भला बतलाओ जी?
मुजरिम ही करे जब न्याय, सज़ा क्यूं पाए,
भला बतलाओ जी?
जब चोर बने कोतवाल तो क्या हो हाल
भला बतलाओ जी?

कोरस जाता है। धन्नामल और राणा बहुत ख़ुश हैं।

धन्नामल : राणा साहब, हम भी कितने ख़ुशक़िळस्मत हैं जो इस तरह जनता की सेवा करने का मौक़ळा हमें दिया गया है।

राणा : जी हां सेठजी, मंत्रीजी ने कल रात घर बुलाकर इशारा कर दिया था। मैं तो आज से ही बस्ती वेळ इन बिचारे ग़रीब मज़दूरों वेळ बीच शरबत बांटने का इंतज़ाम कर रहा हूं।

धन्नामल : राणा सा'ब, आप यह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। मैंने भी व्यापार मंडल की बैठक बुलाई है। कल शाम मंत्रीजी से जो बातचीत हुई थी उसवेळ आधार पर जन सेवा की वुळछ नई योजनाओं को बोर्ड मीटिंग में पास करवाऊंगा।

राणा : सेठजी, आप तो महान हैं।

धन्नामल : अरे क्या कहते हैं राणा सा'ब, यह तो मेरा फ़ळर्ज़ बनता है।

जाता है। राणा चौकन्ना होकर चारों तरफ़ळ नज़र मारता है। हाथ से इशारा करता है। दो लठैत मुंह पर काले कपड़े बांधे आते हैं।

राणा : ठेवेळ पर से हज़ार बोतलें लेकर बस्ती चले जाओ। सब पंडित वेळ हवाले कर देना और कहना कि आज रात से ही बंटवाना शुरू कर दे। सारा काम ख़ामोशी से होना चाहिए। अगर यूनियन वालों को ख़बर लग गई तो खाल खींच लूंगा सालो।

तीनों बाहर जाते हैं। चार बोर्ड ऑफ़ळ डायरेक्टर्ज़ वेळ सदस्य आते हैं। चारों वेळ हाथ में व़ळीमती फ़ळाइलें हैं। एक दूसरे को देखकर मुस्वुळराते हैं, हाथ मिलाते हैं।

मेनन : हैलो देसाई

देसाई : हाय मिसिज़ बनर्जी

मल्होत्रा : हैलो मेनन

मिसिज़ बनर्जीःहाय मल्होत्रा

चारों : सेठजी अभी नहीं आए?

धन्नामल घड़ी देखते हुए आता है।

धन्नामल : मीटिंग का टाइम तो हो गया।

चारों : हैलो सर।

धन्नामल : हैलो ऐव्रीबॉडी, आईम सॉरी यू हैड टू वेट। आइए, मीटिंग शुरू की जाए।

चारों : यैस, यैस, नो टाइम टु वेस्ट, रियली।

धन्नामल : गल्ले वेळ मिल मालिक सेठों, सेठों वेळ बेटी और बेटो। सील लगा दो गोदामों पर, ताले डालो दुकानों पर। पूछो क्यूं, पूछो, पूछो क्यूं।

चारों : क्यूं, क्यूं, क्यूं? क्यूं, क्यूं, क्यूं, क्यूं, क्यूं?

मिसिज़ बनर्जीःलेकिन आख़िर क्यूं?

तीनों : क्यूं, क्यूं, क्यूं?

धन्नामल : क्यूं, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा।
सरकारी आर्डर आया है
आधा उत्पादन राशन में देना होगा, देना होगा,
वह जो दाम बताएंगे
बस चैन उसी पर करना होगा, करना होगा।

चारों : हाय, हाय, राम दुहाई, यह वैळसी विपदा है आई।

धन्नामल : इसीलिए तो कहता हूं कि माल छुपा लो।

चारों : माल छुपा लो। माल छुपा लो।

धन्नामल : गोदामों पर ताले डालो।

चारों : ताले डालो। ताले डालो।

धन्नामल : कहीं दबा दो, कहीं गाड़ दो,
माल वेळ खाते सभी फाड़ दो।
;खुसपुळसाकरब्ध
वैसे मैंने मंत्रीजी से बात कर ली है।

चारों : मंत्रीजी क्या बोले?

धन्नामल : मंत्रीजी पहले तो बिगड़े।

चारों : बिगड़े, मंत्रीजी बिगड़े? वह भी आप पर?

धन्नामल : हां, कहने लगे

दूसरी तरफ़ळ से मंत्रीजी खड़े होते हैं।

मंत्री : भाई सेठ धन्नामल टनाटन जी, आप भी वैळसी बातें करते हैं। चुनाव का वक़्त है। अभी वुळछ दिन तो राशन में सस्ता माल दिलवाएंगे, यह हमने अपने समर्थकों से वादा किया है।

धन्नामल : मंत्रीजी, वादा वही होता है जो वफ़ळा ना किया जाए। इश्वळ का यही दस्तूर है। हा, हा, हा, हा

चारों : हा, हा, हा

एक : अच्छा कहा

तीनों : अच्छा कहा

धन्नामल : जानते हैं फिर मंत्रीजी क्या बोले?

चारों : क्या?

मंत्री : हें, हें, हें, हें, हें, सेठजी, यह राजनीति है, इश्वळ नहीं। और जनता हमारी सास है, माशूवळ नहीं, ख़ासतौर पर आजकल, चुनाव वेळ समय।

धन्नामल : सास हो या ननद, मंत्रीजी, सरकार को हम आधा माल तो राशन वेळ भाव दे नहीं सकते। सीधी सी बात है। और अगर आप ने हमें मजबूर किया तो हम अपनी पूरी दौलत विरोधी पार्टी वेळ इलैक्शन में लगा देंगे। फिर देखते हैं आप वैळसे सरकार बनाते हैं।

मंत्री : सेठजी, यह क्या कह रहे हैं?

धन्नामल : सोच लीजिए।

मंत्री : नहीं, नहीं सेठजी, आप ऐसा नहीं कर सकते।

चारों : मंत्रीजी व़ळाबू आ गए।

धन्नामल : अरे जाते भी कहां? फिर मैंने भी खींचकर कहा *;मंत्री सेब्ध* करना तो मैं भी नहीं चाहता मंत्रीजी, आख़िर हमारा पैंतीस साल का लेन-देन है। पर आपने कोई चारा ही नहीं छोड़ा है।

मंत्री : तो आप चाहते क्या हैं सेठजी...

धन्नामल : वुळछ नहीं, बस यही कि थोड़ा बहुत, जो व़ळसम खाने वेळ लिए काफ़ळी हो, हम राशन वेळ दाम पर इलैक्शन से पहले सरकार को बेच देंगे

चारों : बाव़ळी से खुल्ला ब्योपार करेंगे

धन्नामल : वैसे हम आपको और आपकी पार्टी को कोई शिकायत ना रहने देंगे।

मंत्री : तो बोलिए

धन्नामल : *;मंत्री वेळ नज़दीक जाकरब्ध* आपवेळ पार्टी कोष में चार

करोड़ अभी, एक करोड़ इलैक्शन जीतने वेळ बाद। आपको ज़ाती तौर पर पचास लाख। इलैक्शन वेळ लिए दो सौ जीपें और ट्रक। बोलिए।

मंत्री : हें, हें, हें, हें, सेठजी, हें, हें, हें।

धन्नामल : अब किसी विळस्म की गड़बड़ ना हो।

चारों : यह ज़िम्मेदारी आपकी।

मंत्री : यह ज़िम्मेदारी हमारी, वादा।

धन्नामल : लेकिन यह वादा वफ़ळा करना होगा।

चारों : हा, हा, हा, हा,

मंत्री : हें, हें, हें, हें। *।जाता है।।*

धन्नामल : तो माननीय सदस्यो, अब हमें दो काम करने हैं। एक, चंदे की राशि फ़ळौरन मंत्रीजी वेळ पास पहुंचानी है। और दो।

चारों : गोदाम से माल ग़ायब करना है।

धन्नामल : बैरा, मंगलू को यहां भेजो।

चारों : ओ वेळ सर, गुड बाय सर, बाय-बाय, बाय-बाय, सी यू।

।जाते हैं। मंगलू आता है।।

मंगलू : यैस सर।

धन्नामल : रातों रात गोदाम ख़ाली करवेळ माल बॉर्डर वेळ पार पहुंचाना है। बस्ती से मज़दूर ले लो और सारा काम पूरा करो। लेकिन किसी को कानों-कान ख़बर ना लगे। जाओ।

मंगलू : ओ वेळ सर।

।मंगलू जाता है।।

धन्नामल : पांच करोड़ चंदा देकर अगर कंपनी पांच साल तक चैन से मुनाफ़ळा पीट सवेळ तो क्या बुरा है। हा, हा, दिस इज़ बिज़नैस माई डियर। *।जाता है। एक तरफ़ळ से कलुवा, दूसरी तरफ़ळ से रामसेवक लाठियां लिए आते हैं। चौकन्ने होकर परिक्रमा करते हैं।।*

रामसेवक : जागते रहो।

कलुवा : जागते रहो।

रामसेवक : *;अचानक ठिठकता है।द्ध* कलुवा, देख तो सही। उधर पंडित वेळ घर वेळ पास वुळछ हलचल हो रही है।

कलुवा : हां, वुळछ गड़बड़ है तो सही।

रामसेवक : चल, देखते हैं।

कलुवा : चल, चल।

।दोनों भागते हुए निकलते हैं। लखन और मां आते हैं।।

मां : लेकिन सेठ और राणा को मालूम ना था कि उधर मजदूर भी पूरी तैयारी किए बैठे हैं।

लखन : राणा वेळ गुंडों को बस्ती में मुंह की खानी पड़ी। तैश में आए मज़दूरों ने उन पर हमला कर दिया। वह वहां से सर पर पैर रख कर भागे।

।दोनों जाते हैं। एक नव़ळाबपोश तेज़ी से दौड़ता आता है। दूसरा उसवेळ पीछे लंगड़ाता हुआ भागता है।।

दूसरा : अबे धीरे भाग। मुझसे और ना दौड़ा जाता। सालों ने पैर पर मारा है।

पहला : अबे जान प्यारी है तो भाग वरना अबवेळ सिर पर पड़ेगी।

।दूसरे को सहारा देकर निकाल ले जाता है। रामसेवक और कलुवा भागते आते हैं। इधर-उधर देखते हैं।।

रामसेवक : भाग गए साले।

कलुवा : जाने दो सालों को रामसेवक। अब नहीं लौटेंगे। चल, अब चल पंडित से सुलट लें।

रामसेवक : चल।

।दोनों निकलते हैं मंगलू टार्च लिए चौकन्ने अंदाज़ में आता है। एक तरफ़ळ जाकर दरवाज़ा खटखटाता है।।

मंगलू : लखन, अबे ओ लखन।

।लखन आता है।।

लखन : अरे मंगलू साब आप, इत्ती रात गए?

मंगलू : अबे चुप। जो कहता हूं सुनता जा। आज रात गोदाम पर काम हैगा। अपने साथ एक आदमी लेकर फौरन चला आ। समझा, और हल्ला किया तो साले कल से बस्ती में नजर नहीं आवेगा। और सुन, एक रात वेळ सौ-सौ रुपये मिलेंगे। सारा काम खामोशी से हो गया तो तुझे ऊपर से पचास और दूंगा। अब दौड़ ले।

।जाता है। लखन वुळछ देर खड़ा रहता है। पलटकर दौड़ता है।।

लखन : ओ कलुवा, रामसेवक, ओ कलुवा...।

।कलुवा, रामसेवक और मां दौड़े-दौड़े आते हैं।।

कलुवा : लखन, क्या हुआ?

।कलुवा और रामसेवक वेळ कान में वुळछ कहता है।।

रामसेवक : क्या, एक रात वेळ सौ-सौ रुपए। ज़रूर दाल में वुळछ काला है।

लखन : तू ठीक कहता था कलुवा। इधर राणा बस्ती में शराब भेज रहा है, उधर सेठ गोदाम में वुळछ गड़बड़ कर रहा है।

रामसेवक : तो क्या करें?

कलुवा : तुम दोनों गोदाम पर पहुंचो। मैं पीछे रहूंगा। मौका देखकर अंदर आऊंगा।

रामसेवक : ठीक है।

लखन : फिर हम सब मिलकर संभाल लेंगे।

दोनों : हां-हां।

।तीनों जाते हैं।।

मां : कलुवा, अरे ओ रे कलुवा, पागल मत बन। वापस आ

जा रे छोरा, ना मानेगा। हजार बार समझाओ पर ना मानेगा। जब राणा वेळ गुंडे हड्डी-पसली एक कर देंगे तब आएगी अकल में। बस अपने लाल झंडे की पड़ी है। लाल झंडा ना हुआ बंदूक हो गया। जब उसे पकड़ कर ले जाएंगे तो बचा लेगा उसका लाल झंडा? *;रोती हैद्ध* जाएगा जेल में, पीसेगा चक्की। और इस बुढ़ापे में इसवेळ बीवी-बच्चों को संभालूंगी मैं। *जाती है। एक तरफ़ से मंगलू, दूसरी तरफ़ से लखन और रामसेवक आते हैं।*

मंगलू : आ गए? अब ध्यान से सुनो। रातों-रात सारा माल गोदाम से निकालना है। इधर से एक-एक करवेळ टिरक अंदर आएंगे। फटाफट लदाई करानी होगी। और आवाज ना हो। सुसताते या बीड़ी पीते देख लिया तो खाल उधेड़ दूंगा। चलो, शुरू हो जाओ। उठाओ माल। उठाओ।

मंगलू ताल में बोलता है। लखन और रामसेवक एक तरफ़ से बोरे लाकर दूसरी तरफ़ रखने का अभिनय करते हैं। मंगलू वेळ गाने में अभिनय-स्थल वेळ बाहर बैठे सभी अभिनेता शामिल होते हैं।

मंगलू : माल उठाओ, माल उठाओ।
जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ।
माल उठाओ, मत सुसताओ।
माल उठाओ, माल उठाओ।
उठाओ माल उठाओ

गति द्रुत होती है।

ठेलों पर लदवाते जाओ
माल उठाओ मत सुसताओ
जल्दी-जल्दी, जल्दी-जल्दी।
माल उठाओ, माल उठाओ
माल उठाओ, माल उठाओ
उठाओ-

अचानक कलुवा आता है।

कलुवा : ठहर जाओ!

थोड़ी देर को ख़ामोशी। सब रुकते हैं

यह क्या हो रहा है मंगलू सा'ब? रात को गोदाम से माल कहां जा रहा है?

मंगलू : तुझे इससे मतलब? खत्ती में जा रहा है या भाड़ में। मालिक का हुवुळम है इसीलिए जा रहा है।

कलुवा : गोदाम तो दिन में भी खाली कराया जा सकता था। यूं रात गए, चोरी-छुप्पे मजूरों को उनवेळ घरों से बुलाकर क्यूं खाली करवाया जा रहा है?

मंगलू : देख बे कलुवा, बेमतलब हर बात में टांग मत अड़ाया कर। सेठजी का माल है। जब मरजी, जहां मरजी ले जाएं। चाहें तो जलाकर खाक कर दें। कोई चोरी नहीं कर रहे हैं।

कलुवा : हां, हां चोरी कर रहे हैं। यह अनाज है। मजूरों की रोटी है इस पर हमारा हक है। हम जानते हैं कि अगर आज यहां से माल जाने दिया तो इलैक्शन वेळ बाद चौगने दाम पर मिलेगा।

मंगलू : अब तुझसे बहस में कौन पड़े कलुवा, बहस में तो तू शैतान वेळ भी कान काटता है। जरा इधर तो आ।

कलुवा : जो बात करनी है सबवेळ सामने करो।

मंगलू : अबे घबराता क्यों है? कोई काट खाऊंगा तुझे? *;कलुवा को एक तरफ़ ले जाता है।द्ध* सुन बे कलुवा, क्यूं फालतू वेळ झगड़ों में पड़ता है, हैं। अबे खा, पी, आराम कर। सेठजी तन्खा तेरे घर पहुंचा देंगे। सेठजी ने कई बार कहा है कि कलुवा को काम पर बुला कर लाओ। मेरी मान तो सेठजी से हाथ मिला ले। फायदे में रहेगा साले।

कलुवा : हम यूनियन करते हैं मंगलू सा'ब, दलाली दुकानदारी नहीं। आगे से इत्ती बड़ी बात करने की हिम्मत ना करना।

मंगलू : अरे, अरे, बड़ा रौब दिखा रहा है। भाई-बंदी की बात ही समझ में नहीं आती। चल, चल, चल, चल, चल, बाहर हो जा, बहुत मुंह लगा लिया तुझे।

कलुवा : जब धमकी नहीं चली तो रिश्वत दे रहा था। पर मंगलू, तुम वुळछ भी कर लो। माल तो गोदाम से जाएगा नहीं।

मंगलू : तो फिर तू भी सुन ले कि मेरा नाम अगर मंगलू है तो मैं भी माल गोदाम से लेकर ही जाऊंगा, और वह भी आज ही रात।

लखन : कोसिस करवेळ देख लो मंगलू सा'ब, तुम भी हो, हम भी हैं।

मंगलू : देख लो सालो, आखिरी बार कह रहा हूं मान जाओ वरना मुझसे बुरा कोई ना होगा।

कलुवा : और जो हमने कह दिया वह भी आखिरी लफज है।

मंगलू : *;धमकाता है।द्ध* कलुवा!

कलुवा : *;लाठी उठाता है।द्ध* खबरदार।

मंगलू : तेरी यह हिम्मत?

लखन/
रामसेवक : *;लाठी उठाकरद्ध* ख़बरदार।

मंगलू : *;पीछे हटता है।द्ध* ठीक है, ठीक है वुळत्तो, अभी तुम्हारी ही सही। पर याद रखना, मेरा नाम मंगलू है।

भाग जाता है।

कलुवा : देखो भैया, अब एक कदम लिया है तो आखिर तक

लड़ना होगा। रात भर होशियारी से गोदाम पर पहरा देना होगा। सवेरे शहर में सेठ और मंत्री की इस सांठ-गांठ का भंडा फोड़ना होगा। चलो, चलकर गेट पर डट जाएं। लखन, हम लोग यहां पहरा देते हैं। तू दौड़कर बस्ती से सबको साथ लिवा ला। जल्दी कर।

तीनों जाते हैं। धन्नामल और राणा आते हैं।

धन्नामल : हा, हा, हा, हा, हा

राणा : मैंने कहा कि कलुवा और उसवेळ साथियों को गिरफ़्तार करो तो जल्लाद सिंह कहता है कि 'मंत्रीजी ने हुक्म दिया है कि इलैक्शन तक बस्ती में कोई पकड़-धकड़ ना हो। बीस हज़ार वोट हैं।'

धन्नामल : राणा सा'ब, आपवेळ साथ वाव़ळई ज़्यादती हो गई। लेकिन ज़रा सोच वेळ तो देखिए, मंत्रीजी वेळ हुक्म में भी दम है। आख़िर बीस हज़ार वोट वुळछ माने रखते हैं। इलैक्शन का रंग बदल सकता है।

राणा : सेठजी, मुझे आपसे यह उम्मीद ना थी। अगर आड़े वक़्त में हम एक दूसरे का साथ नहीं देंगे तो कब देंगे।

धन्नामल : राणा सा'ब, आपवेळ लिए जान हाज़िर है। फिर इलैक्शन की लड़ाई में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। दो-चार दिन की बात है, बाद में सब संभाल लिया जाएगा। हम कोई मर गए हैं?

राणा : सेठजी, आप यह क्यूं नहीं समझते कि कलुवा को अगर पळौरन ना पकड़ा गया तो यह उसकी बहुत बड़ी जीत होगी। लोग समझेंगे हम डर गए। इलैक्शन पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

धन्नामल : बुरा असर? बुरा असर पड़ सकता है? राणा सा'ब, इलैक्शन ऐसे जीता-हारा नहीं जाता। इलैक्शन जीता जाता है आपकी शराब और हमारे पैसे से

मंगलू दौड़ा आता है। बहुत तेज़ रफ़्तार से बोलता है।

मंगलू : मार डाला, मार डाला, मार डाला सेठजी, कलुवा और उसवेळ गुंडों ने गोदाम पर हमला कर दिया। वह बहुत सारे थे, मैं अवेळला पड़ गया। मुझे बहुत मारा। गोदाम पर कब्जा कर लिया है उन्होंने

धन्नामल : *;दहाड़करद्ध* ख़ामोश बदतमीज़। देखता नहीं हम राणा सा'ब से बात कर रहे हैं। माफ़ळ कीजिए राणा सा'ब, एक मिनट। *;मंगलू को एक तरफ़ळ ले जाकर थप्पड़ मारता है।द्ध* बोल अब, क्या हुआ? *;मंगलू सेठ वेळ कान में खुसपुळसाता है।द्ध* क्या, क्या? *;मंगलू वुळछ और बताता है।द्ध* क्या, क्या? *;मंगलू को धक्का देता है।द्ध* गधे वेळ बच्चे, इतना सब हुआ और तू यहां भाग आया? गोदाम उन पर छोड़वेळ? *;फिर धक्का देता है।द्ध* इसीलिए तुझे फांसी वेळ फंदे से छुड़ाकर यह काम दिया था? उफ़्फ़ळ, वैळसे-वैळसे गधे मैंने भरती कर लिए हैं।

मंगलू : सेठजी, वह बहुत सारे थे, मैं अवेळला।

धन्नामल : बको मत। फ़ळौरन से पहले जल्लाद सिंह को यहां बुलाकर लाओ। जाओ। *;मंगलू जाता है। सेठ उत्तेजित होकर इधर-उधर देखता है।द्ध* अबे ओ गामा, मंत्रीजी वेळ घर पर फ़ळोन तो मिला ज़रा।

राणा : हुआ क्या सेठजी?

धन्नामल : *;चीख़करद्ध* वुळछ नहीं हुआ। होना क्या था, हैं? *;शांत होता है।द्ध* आप, आप ठीक कहते थे, ठीक कहते थे राणा सा'ब। इस कलुवा को ठिकाने लगाना होगा, वरना तो यह सब मलियामेट कर देगा। मंत्रीजी से ज़रा फ़ळोन पर बात कर लूं, फिर आगे का प्लान बनाते हैं। चलिए। *दोनों जाते हैं। लखन, रामसेवक, कलुवा और मां आते हैं।*

लखन : जागते रहो

रामसेवक : जागते रहो

कलुवा : जागते रहो

मां : कलुवा, मेरा कहना मान बेटा, सेठ से यूं टक्कर न ले। उससे लड़कर आज तक कोई ना बचा।

कलुवा : मां, तू इत्ता घबराती क्यूं है? हम इत्ते सारे लोगों वेळ आगे सेठ क्या कर लेगा? तू बस हिम्मत रख, सेठ यहां से एक दाना भी नहीं निकाल पाएगा।

लखन : जागते रहो

रामसेवक : जागते रहो

मां : वह तुझे मरवा डालेगा रे कलुवा, फिर तेरे बाल-बच्चों का क्या होगा?

कलुवा : ऐसा वुळछ नहीं होगा मां।

लखन : चल कलुवा, एक जगह खड़े रहने से काम नहीं चलेगा।

कलुवा : हां, हां, चलो

तीनों 'जागते रहो' कहते हुए जाते हैं।

मां : कलुवा, अरे ओ रे कलुवा *जाती है। धन्नामल आता है। पीछे-पीछे राणा और जल्लाद सिंह लट्ठ लिए आते हैं।*

धन्नामल : गोदाम उनवेळ बाप का है जो हुक्म चलाएंगे कि कब माल निकलेगा, कब नहीं निकलेगा।

राणा : मैं तो कब से कह रहा हूं सेठजी, इतनी ढील देना ठीक नहीं। सांप वेळ तो बच्चे को ही वुळचल देना चाहिए।

धन्नामल : अरे तो अब भी क्या बिगड़ा है? देखता हूं कितने ख़म हैं सालों में। खड़े-खड़े गोदाम ख़ाली ना करवाया तो मेरा नाम भी धन्नामल टनाटन नहीं।

जल्लाद : सेठजी, आप देखते रहिए। हरामज़ादों को एक मिनट में दौड़ा दूंगा।

राणा : श्श्श्श्□सेठजी, देखिए। कितने सारे लोग हैं, और सब लाठियां लिए हुए हैं।

जल्लाद : घबराने की कोई बात नहीं है राणा साहब। हमें देखते ही सारी लाठियां झुक जाएंगी। पुलिस में पैंतीस साल घास नहीं खोदी है जल्लाद सिंह ने। आइए।

□तीनों जाते हैं। कलुवा, मां, लखन और रामसेवक आते हैं।□

कलुवा : जागते रहो।

मां : मैं कहती हूं अब भी मान जा कलुवा, क्यूं फिजूल में बखेड़ा पैळलाता है।

लखन : चाची, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि तू इत्ता डरती क्यूं है, हैं? कलुवा कोई अवेळला तो ना है। इत्ते सारे लोग हैं।

मां : लखन बेटा, तू भूल गया होगा, पर मैं नहीं भूली। पहले भी तुम लोग बड़ी डींगें मारते थे, पर जब वह आए थे तो उनवेळ सामने तुम्हारी एक न चली थी।

कलुवा : हम भी नहीं भूले हैं मां। और यह भी नहीं भूले हैं कि पिछली बार हम क्यूं मार खा गए थे। तब हम गिने-चुने थे। आपस में लड़ते थे। पूळट थी हमारे बीच में। आधे से ज्यादा लोग यूनियन वेळ नाम से ही भागते थे। पर आज? आज इलावेळ की सारी पैळक्ट्रियों वेळ मजूर हमारे साथ हैं। आज हम मजबूत हैं। अब वह हमसे नहीं जीत सकते।

रामसेवक : जागते रहो!

लखन : श्श्श्श, कलुवा□देख तो जरा, उधर से वुळछ लोग आ रहे हैं।

कलुवा : सेठ वगैरा लगते हैं। सब होशियार रहना। और याद रहे, हमारी तरफ से कोई झगड़ा शुरू नहीं होना चाहिए।

□तीनों एक तरफ़ळ तैनात होते हैं। मां सहमी-सी खड़ी होती है। दूसरी तरफ़ळ से धन्नामल, राणा और जल्लाद आते हैं। इन्हें देखकर रुक जाते हैं। थोड़ी देर दोनों गुट एक-दूसरे को देखते हैं। फिर धन्नामल मज़दूरों की तरफ़ळ बढ़ता है।□

धन्नामल : दरवाज़ा छोड़ दो। *;मज़दूर डटे रहते हैं।द्ध* मैं कहता हूं गेट वेळ सामने से हट जाओ। *;मज़दूरों की तरफ़ळ से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। सेठ उन्हें देखता धीरे-धीरे उलटे पांव लौटता है।द्ध* जल्लाद सिंह, इन लोगों को यहां से हटाओ। हमें अपने गोदाम से माल निकालना है।

जल्लाद : क्यों बे, सुनी नहीं? *;मज़दूरों वेळ बिलवुळल नज़दीक पहुंचता है।द्ध* सुनी नहीं सेठजी ने जो कही? हट जाओ गेट से।

कलुवा : गोदाम नहीं खुलेगा।

;जल्लाद पीछे हटता है। राणा आगे बढ़ता है।द्ध

राणा : क्या कहा, गोदाम नहीं खुलेगा? तुम्हारे बाप का है यह गोदाम? हट जाओ सामने से।

कलुवा : राणा सा'ब, गोदाम नहीं खुलेगा, यह मजूरों का पैळसला है।

□राणा पीछे हटता है।□

जल्लाद : *;दूर से हीद्ध* मजूरों का पैळसला है? डिरैक्टर लगे हैं मजूर जो उनका पैळसला है? छोड़ दो गेट वरना बहुत बुरा होगा।

कलुवा : थानेदार साब, हम झगड़ा नहीं करना चाहते, लेकिन गोदाम से माल बाहर नहीं जाएगा यह हमारा आखिरी पैळसला है।

जल्लाद : *;चिल्लाता हुआ आगे आता है।द्ध* तुम्हारे आख़िरी पैळसले की ऐसी तैसी। मैं देखता हूं वैळसे नहीं खुलता गोदाम।

□मारने को लट्ठ उठाता है। तीनों मज़दूर भी लट्ठ उठाते हैं। जल्लाद ठिठक जाता है।□

राणा : तुम्हारी यह हिम्मत!

□लट्ठ उठाकर झपटता है। एक मज़दूर उसकी तरफ़ळ मुड़ता है। वुळछ देर दोनों गुट ऐसे ही खड़े रहते हैं। धन्नामल काफ़ळी डर गया है।□

धन्नामल : राणा साहब, जल्लाद सिंह, रहने दीजिए। इन लोगों से सुलटना मैं जानता हूं। *;मज़दूरों सेद्ध* अभी मैं और झमेला नहीं करना चाहता इसलिए जा रहा हूं, पर यह न समझना कि मैं डर गया हूं। सवेरे आऊंगा और मिनटों में गोदाम खुलवा लूंगा। देख लेना, चलो।

□तीनों जाते हैं। वुळछ देर मज़दूर वैसे ही लट्ठ उठाए खड़े रहते हैं।□

मां : चले गए, वह चले गए, चले गए, भाग गए। वह चले गए कलुवा, वह भाग गए लखन, रामसेवक तूने देखा? ऐसा तो ना आज तक देखा ना सुना। सेठ, राणा, दारोगा, भाग गए, हमसे डरकर भाग गए।

रामसेवक : सारे मज़दूर एक साथ रहेंगे तो उन लोगों की अंधेरगर्दी सब ख़त्म हो जाएगी।

कलुवा : वह चले गए, पर सवेरे जरूर लौटेंगे, अपने साथ पुलिस वेळ दस्ते लेकर आएंगे। सवेरे से पहले बस्ती वेळ, आसपास वेळ सारे मजूरों को यहां इकट्ठा करना होगा।

लखन : जब हम आपस में बंटे हुए थे, हम में पूळट थी।

रामसेवक : हम एक यूनियन, एक झंडे वेळ नीचे इकट्ठा नहीं हुए थे।

□दो बूढ़े और एक जवान मज़दूर आते हैं।□

बूढ़ा-२ : तब वह हमको डरा धमकाकर

बूढ़ा-१ : एक दूसरे से लड़वाकर, अपना उल्लू सीधा करते थे।

जवान : तब खुलेआम उनकी बेईमानी, कालाबाज़ारी और अत्याचार चलते थे।

मां : उन्होंने हमारे दिलों में डर बैठा दिया था। हमें कायर, मतलबी और कमजोर बना दिया था।

कलुवा : पर आज हम सब एक साथ हैं। आज हमारे दिलों से डर निकल चुका है।

लखन : जो लोग पहले सामने आने से भी घबराते थे, वही आज बहादुरी से मुक़ाबला करने को तैयार हैं।

रामसेवक : कल तक जो मालिकों से, गुंडों से, पुलिस से दबकर रहते थे, आज उन्हें अपनी ताक़त पर, अपनी एकता पर भरोसा है।

बूढ़ा-२ : आज सारे मजदूर, बूढ़े, जवान, मर्द, औरत, कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने को तैयार हैं।

बूढ़ा-१ : आज कोई भी, हमें आपस में नहीं लड़वा सकता। आज कोई भी हममें फूट नहीं डलवा सकता।

जवान : अब इनकी गुंडागर्दी नहीं चल सकती। अब वह हम पर बे रोक-टोक अत्याचार नहीं कर सकते। आज वह हमको बेरहमी से दबा नहीं सकते।

कलुवा : अब हमें अपने मजदूर होने का मतलब समझ में आ गया है। आज हम अपनी एकता की ताकत को पहचान गए हैं।

मां : अब उनकी मनमानी नहीं चलेगी।

सब : *;लाल झंडे उठाते हैं।द्ध* अब हम हिम्मत वेळ साथ, निडर होकर अपना हक़ळ मांग सकते हैं।

कलुवा : आज हम अपने हक वेळ लिए लड़ सकते हैं। आज हम कामयाब हो सकते हैं।

सब : अब हमें दुनिया की कोई भी ताक़ळत नहीं हरा सकती।

गाना : जागा नया इंसान ज़माना बदलेगा, बदलेगा, ज़माना बदलेगा, जागा...
अरे उठा है जो तूफ़ळान
उठा है जो तूफ़ळान वह इस दुनिया को बदलकर दम लेगा,
दम लेगा, जागा...
एका सबसे पहले यारो समय की एक पुकार यही
एका हर पल से जीतेगा ढाल यही तलवार यही
हम एक अगर हो जाएं तो...
हम एक अगर हो जाएं तो एका सारे करतब कर लेगा,
जागा, जागा नया इंसान ज़माना बदलेगा, बदलेगा,
ज़माना बदलेगा, जागा...

o